International Journal of Arts & Education Research

वैश्विक आतंकवाद और मीडिया की भूमिका

डॉ सद्गुरू पुष्पम्[*1]

[1]प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, एम.एम.कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद।

वर्तमान भूमण्डलीकरण के युग में आंतकवाद एक भयावह सच्चाई के रूप में पूरे विश्व को प्रभावित किया है इसका कोई मजहब नही है लेकिन मजहबों का सहारा लेकर हिंसा के माध्यम से आम और खास जनजीवन को दहशत में रखा हैं। आंतकवादी प्रवृत्ति के विकास में अनेक कारणों का समन्वय है इसमें सांसेंतिक धार्मिक, आर्थिक, साम्राज्यवादी कारण भी सम्मिलित है तथा निरन्तर असन्तुलित विकास, असमानता, अशिक्षा, कम समय में अधिक पाने की लालसा, असन्तोष जैसी प्रवृत्ति भी युवा पीढ़ी का दिग्भ्रामित कर आंतकवादी गतिविधियों हेतु प्रशिक्षित कर उन्हें आंतकवादी बनाते हैं तथा विश्व पटल में अशान्ति फैलातें हैं। आंतकवाद के दो प्रमुख मूल बिन्दु हिंसा तथा कट्टरतावाद हैं। आंतकवाद पूरे दुनिया के समक्ष एक विकट समस्या हैं। आंतकवाद के वर्तमान स्वरूप को अमेरिका की (1979-89) अफगान नीति का परिणाम माना जाता है। अमेरिका ने सोवियत प्रभाव को कम करने हेतु अफगानिस्तान में मुजाहिद्दीनों को प्रशिक्षित करने के लिये अथाह धन पाकिस्तान को उपलब्ध कराया अफगान युद्ध की समाप्ति के पश्चात् आंतक की फसल लहलहाने लगी। मानवीय मूल्यों का हनन दृष्टिगत होता है।

राजनीतिक विचारक बर्क के अनुसार मीडिया किसी भी राष्ट्र का चतुर्थ स्तम्भ होता है जो जनमत को वाणी प्रदान करता है, विभिन्न दृष्टिकोणों में समन्वय का कार्य करता है तथा एक विचार को बहुतों तक पहुंचाने का माध्यम है। मीडिया ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में होने वाली घटनाओं से जनमानस का जोड़ने का कार्य किया हैं। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में आंतकवाद जो एक वैश्विक समस्या है मीडिया इससे अछूता नही हैं। मीडिया की नजरा आंतकवाद पर है तथा आंतकी भी मीडिया का सहारा लेकर प्रसार क्षेत्र का विस्तार तथा उद्देश्य प्राप्ति में सहायक के रूप में उपयोग करते हैं। 9/11 अमेरिका, 9/20 इस्लामाबाद, 26/11 मुम्बई तथा 7/7 लन्दन में हुई आंतकी घटनाओं के पश्चात् मीडिया की भूमिका से साफ स्पष्ट होता है कि आंतकी गतिविधियों के विरूद्ध कार्यवाही पर सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों की भूमिका में देखा जा सकता है।

आंतक के विरूद्ध कार्यवाहियों में मीडिया की सकारात्मक भूमिका

आंतकवाद जो विश्व की विकट समस्या जो लक्ष्य तथा चेहरा विहीन है मीडिया जो वर्तमान में शक्ति सम्पन्न है, सशक्त वैचारिक माध्यम जिसके जरिये से आंतकवाद के प्रति आम आदमी के नजरिये को बदला जा सकता है आंतक के वीभत्स स्वरूप को जनमानस को दर्शाकर उसके खिलाफ एक जुट करने में सक्षम है। आंतकियों के उद्देश्य को असफल करने में भी समर्थ समय-समय पर इसने आंतकियो के खिलाफ सरकारी कार्यवाहियों में सहयोगी की भूमिका निभाकर अपने सकारात्मक स्वरूप को दिखाया हैं।

आम आदमी को हिंसा और कट्टरता के विरूद्ध खड़ा करने में सहयोगी भूमिका निभाने में सार्थक पहल की है। मीडिया ने अमेरिका में 11 सितम्बर 2001 को वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर तथा पेंटागन में आंतकी हमलों

के समय वहाँ की मीडिया ने लोगों एकजुटता स्थापित किया समस्त अमेरिकी चैनलों ने ***'वार आन अमेरिका'*** का सूत्र वाक्य प्रसारित कर सरकार तथा सुरक्षाकर्मियों द्वारा प्रतिरोधात्मक कार्यवाही को उचित बताया तथा आंतकियों के हौसलें पस्त हुये।

मीडिया ने लोगों तक यह बात पहुँचाने में सकारात्मक भूमिका निभाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार से काले धन का प्रयोग आंतकी शिविरों में आंतकवादियों को प्रशिक्षित करने तथा हथियार उपलब्ध करने में किया जाता है इसके समर्थक में अमेरिका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, भारत के शासकों तथा नेताओं का भी हैं। किस प्रकार स्विस बैकों में जमा काला धन का उपयोग आंतकी गतिविधियों में लगाया जाता हैं।

मीडिया ने आम जनता को दिखाया है कि किस प्रकार पाक अधिंत कश्मीर में आईएसई तथा पाकिस्तान की सेना की मदद से आंतक प्रशिक्षण किया जाता है।

1971 ई0में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय प्रिन्ट कास्ट से जुड़े लोगों ने अत्यन्त जिम्मेदारी के साथ युद्ध व बांग्लादेश के जन्म लेने की घटनाओं का आंखों देखा हाल जिम्मेदारी पूर्वक दर्शाया था जिसने राष्ट्र में जोश पैदा करने में महती भूमिका अदा किया था।

मीडिया दूर घटने वाली घटनाओं को जनमानस में निजीत्व से जोड़ देती हैं। निजी को सार्वजनिक तथा सार्वजनिक की निजी बनाने में सहयोगी हैं।

दुनिया के समक्ष आंतकवाद को समस्या के रूप में प्रस्तुत करने में मीडिया ने सहयोगी भूमिका अदा किया है। मीडिया के तीन प्रमुख कार्य सूचना, शिक्षा और मनोरंजन आंतकी गतिविधियों से जनमानस को सूचित कर आंतक की मूल जड़ अशिक्षा, अभाव, बेरोजगारी, फिरकापस्त ताकतों के खिलाफ एक जुट करने में सार्थक पहल की है।

भारत जो आंतकवाद से सर्वाधिक पीड़ित रहा है। जम्मू कश्मीर, पंजाब, पूर्वोतर इलाकों इत्यादि जेहाद आंतकियो ने अविस्मरणीय चोट पहुँचायी है वहाँ मीडिया कर्मी अपनी जान जोखिम में डालकर खबरे जनता तक पहुँचाते है तथा कभी स्वयं भी हिंसा का शिकार होकर एक खबर बन जाते हैं।

मीडिया के सहयोग के फलस्वरूप भारत में कई आंतकी हमलों को रोका जा सका-संसद पर दिसम्बर 2001, दिल्ली में सीरियल ब्लास्ट की घटना, समझौता एक्सप्रेस पर आंतकियों के हमलों को रोका जा सका। मीडिया ने आंतकवाद को राष्ट्रीय की अपेक्षा वैश्विक समस्या के रूप में प्रस्तुत किया।

आंतकी अजमल कसाब की पाकिस्तानी नागरिक होने की सच्चाई को दुनिया के सम्मुख रखा पाकिस्तान सरकार भी इस बात से नहीं मुकर पायी कि वह पाकिस्तानी नागरिक है।

26/11 के आंतकी हमलों के पश्चात् मीडिया के भूमिका को लेकर बहस छिड़ गयी है बदलते भूमण्डलीकरण के युग में मीडिया जो एक सशक्त माध्यम है दूरियाँ घटाने की वह भी बाजार वाद से जुड़ गयी है। अब वह आंतकवाद को एक आक्रमक सिद्धान्त और मिशन के रूप मे देखने को विवश है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

मीडिया की नकारात्मक भूमिका

बदलते वैश्विक परिदृश्य में मीडिया भी बाजारवाद से प्रभावित हो रहा है। यह समस्या को सुलझाने के स्थान पर उलाझने और समस्या से जुड़े व्यक्तियों को महिमाण्डित करने को प्रयासरत् रहता हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया 'वे खबर हर कीमत पर' 'सबसे पहले सबसे तेज की नीति' पर चलकर जनसेवा की भावना से हटकर अपने लक्ष्य से भ्रमित होते हैं। वर्तमान में मीडिया आंतकवाद के नाम पर आम लोगों में दहशत तथा आंतकवादियों को महिमामण्डित करने में उल्लेखनीय भूमिका प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से निभाता हैं।

आंतकी हमलों के समय मीडिया भूमिका पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है मुम्बई 26 नवम्बर 2008 को ताज होटल, ओबेराय होटल तथा छत्रपति टर्मिनल पर आंतक हमला। मीडिया ने इन घटनाओं की रिपोर्टिंग तथा लाइव कवरेज में अपरिपक्वता का परिचय दिया। सुरक्षा कर्मियों की ब्यूह रचनाओं में बाधा भी उत्पन्न किया। रिर्पोटरों द्वारा की गयी चूकों का खामियाजा सुरक्षा बलों को भुगतना पड़ा मुम्बई हमलों के समय मीडिया की भूमिका को कटघरे में खड़ा किया गया। सरकार ने इसी को ध्यान में रखकर केबिल नेटवर्क रेग्युलेशन एक्ट में संशोधन का प्रस्ताव रखा।

मीडिया के उत्तरदायित्व पर भी सवाल उठता है उदाहरण स्वरूप आंतकी सरगना ओसाना बिन लादेन द्वारा जारी कैसेट के प्रसारण में समाचार चैनलों में होड़ मच गयी थी। मीडिया आंतकी हमलों तथा युद्ध के प्रसारण में नैतिक उत्तरदायित्व का निर्वहन नहीं करता दृष्टिगत होता है। जिससे आम जन मानस में दहशत का माहौल उत्पन्न होता हैं।

मीडिया के हस्तक्षेप के कारण जम्मू कश्मीर जो दशकों से आंतकी घटनाओं से प्रभावित रहा है वहाँ पर सैन्य कर्मी स्वतन्त्र रूप से कार्यवाही करने में असक्षम प्रभावित रहा है वहाँ पर सैन्य कर्मी स्वतन्त्र रूप से कार्यवाही करने में असक्षम महसूस करते है। किसी भी आंतकी के मरने पर मीडिया मानवाधिकार की दुहाई देता है इसी के डर से सेना भी आंतकियों को मारने में एहतियात बरतते हैं।

आंतकी हमलों के समय मीडिया नीतिगत सिद्धान्त से हटकर कार्य करता है वह उद्देश्य रहित केबल व्यावसायिक मापदण्ड को ही प्रमुखता देकर कार्य करता है। मीडिया के उद्देश्य हीनता के कारण आंतकी सम्प्रदायिक दंगें, कानून व्यवस्था बिगड़ने जैसे उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। आंतकवादी भारत में पंजाब में इस उद्देश्य में सफल हुये थे।

- मीडिया आंतक तथा भय का वातावरण बनाने में आंतकियों की सहयोग प्रदान करते है। खबरों को इतनी रोचक तथा सनसनी बना देते है की जनमानस का दिल दहल जायें।

- मार्च 2002 में गुजरात दंगों में रिर्पोटिंग को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ। दिल्ली, मुम्बई, जयपुर, अहमदाबाद, हैदराबाद आदि बम धमाकों के समय समाचार चैनलों ने आंतक फैलाने का काम किया तथा दहशत बढ़ाने में आंतकियों के साथ अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी नजर आये।

- मीडिया आंतकियों के कैम्प तथा हमलों को बार-बार दिखाकर उनके उत्साह को बढ़ाने तथा आम आदमी को डराने का काम करते हैं।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

निष्कर्षतः हम देखते है कि आज आंतकवाद से लड़ना मीडिया के समक्ष एक कठिन चुनौती है। वैश्विक आंतकवाद के विरूद्ध इसे सकारात्मक कार्यवाही करनी होगी आंतकवाद के बुनियादी कारणों तथा लक्ष्यों से परिचित आम जनता को कराकर वैचारिक स्वर पर प्रहार करना होगा। फिरकापरस्त ताकतों के वास्तविक चेहरे की दर्शाकर युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने वाले इन ताकतों को पर्दा विहीन करना ही लक्ष्य होना चाहिए। अशिक्षा तथा निर्धनता जो आंतकी गतिविधियों में संलिप्त लोगों के लिये उत्तरदायी हैं। ऐसे क्षेत्र जहाँ अशिक्षा, असमनता, बेरोजगारी, निर्धनता, भेदभाव तथा अन्याय है वहाँ जनता की आवाज बनकर मीडिया को सरकार को इन समस्याओं को दूर करने में सहयोगी भूमिका निभानी होगी तभी आतंकवाद को जड़ से समाप्त किया जा सकता है। हिंसा का प्रतिरोध अहिंसा से ही हो सकता है हिंसा से हिंसा बढ़ेगी। अभाव का असंतोष किसी भी समस्या का मूल कारण होता इसी को दूर कर समस्या का निदान सम्भव हो पाता हैं। पाकिस्तान, अफगानिस्तान जो आतंकवाद की जड़ माना जाता है वहाँ की मूल समस्या आभाव तथा वैचारिक कट्टरता ही है इन दोनों समस्या को मीडिया दूर करने में सक्षम है। इस प्रश्न पर जनमत निर्माण में मीडिया की जिम्मेदारी चुनौतीपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ

- मीडिया विमर्श
- योजना
- प्रतियोगिता दर्पण
- समसामयिकी

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.